International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

एनईपी 2020 के तहत किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को बढ़ाने में इंटरनेट की भूमिका

Khushal Mehta[1], Prof. (Dr.) Sandhya Sharma[2]

[1]Research Scholar, [2]Research Supervisor
Jayoti Vidyapeeth Women's University.

यह शोधपत्र "एनईपी 2020 के तहत किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को बढ़ाने में इंटरनेट की भूमिका" पर आधारित है, जिसका उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल शिक्षा और इंटरनेट ने भारतीय किशोरों के सीखने के अनुभवों को किस प्रकार प्रभावित किया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था कृ (1) एनईपी 2020 के संदर्भ में इंटरनेट आधारित शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना तथा (2) इंटरनेट आधारित शिक्षा की संभावनाओं और चुनौतियों की पहचान करना। यह शोध पूर्णतः समीक्षा–आधारित (Review Paper) है, जिसमें सिस्टेमैटिक लिटरेचर रिव्यू (Systematic Literature Review) पद्धति अपनाई गई। इसके अंतर्गत वर्ष 2019 से 2025 के बीच प्रकाशित 14 प्रासंगिक शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और शैक्षणिक लेखों का चयन किया गया। सभी अध्ययनों का विश्लेषण गुणात्मक (Qualitative) दृष्टिकोण से किया गया, तथा मुख्य विषयों कृ डिजिटल पहुँच, शिक्षकों की तत्परता, आत्मनिर्देशित अधिगम, और डिजिटल विभाजन कृ पर थीमैटिक विश्लेषण किया गया।
साहित्य विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट ने किशोरों की शैक्षिक पहुँच, सहभागिता, और सीखने की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है। डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और ई–लर्निंग प्लेटफार्मों ने शिक्षा को अधिक लचीला और आत्मनिर्देशित बनाया। हालांकि, कई अध्ययनों ने यह भी संकेत किया कि डिजिटल अवसंरचना की कमी, तकनीकी साक्षरता का अभाव, तथा अत्यधिक इंटरनेट उपयोग से उत्पन्न मानसिक दबाव अभी भी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।
निष्कर्षतः, अध्ययन यह सिद्ध करता है कि एनईपी 2020 के अंतर्गत इंटरनेट किशोर शिक्षा में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभा रहा है। यह न केवल शिक्षण को आधुनिक बना रहा है, बल्कि समावेशिता, नवाचार और आत्मनिर्भर अधिगम को भी प्रोत्साहित कर रहा है। किंतु इस परिवर्तन को स्थायी और प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता और संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।

मुख्य शब्दः एनईपी 2020, इंटरनेट, किशोर शिक्षा, डिजिटल साक्षरता।

1. प्रस्तावना

भारत सरकार (2020); यूनिसेफ एवं आईटीयू (2020); रामकृष्ण (2023) कृराष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने शिक्षा में डिजिटल और ऑनलाइन साधनों के समावेशन को एक केंद्रीय दिशा–निर्देश के रूप में प्रस्तुत किया था और किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध करने में इंटरनेट की भूमिका पर विशेष बल दिया गया था। NEP 2020 ने ब्लेंडेड लर्निंग, डिजिटल साक्षरता, तथा राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) जैसे उद्यमों के माध्यम से सीखने की पहुँच और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए रणनीतियाँ प्रस्तावित की थीं, जिससे ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में किशोरों के लिए अध्ययन के नए मौके उत्पन्न होने की उम्मीद की गई थी। शिक्षा जगत में महामारी–काल के अनुभव ने यह स्पष्ट कर दिया कि इंटरनेट आधारित शिक्षण–व्यवस्थाएँ औचक रूप से आवश्यक टूल बन गई हैं; इसने पारंपरिक कक्षा सीमाओं को फैलाकर अध्ययन संसाधनों, इंटरैक्टिव लर्निंग मॉड्यूल और आकलन विधियों तक किशोरों की पहुँच बढ़ाई है। UNICEF और ITUकी रिपोर्ट ने भी दोहराया कि वैश्विक स्तर पर एक बड़ी संख्या के घरों में इंटरनेट न होने के कारण डिजिटल विभाजन बना हुआ है, पर जहाँ पहुँच मिली वहाँ किशोरों की शैक्षिक भागीदारी और सीखने के निष्पादन में स्पष्ट सुधार दर्ज किया गया।
त्ंातपींद (2023) और अन्य समकालीन अध्ययनों ने यह प्रदर्शित किया कि इंटरनेट का प्रभाव द्विध्रुवीय रहा कृ एक ओर यह सीखने के अवसर, संभाव्य ट्यूटरिंग, मल्टीमीडिया स्रोत और आत्मनिर्देशित अधिगम (मसि–कपतमबजमक समंतदपदह) को बढ़ावा देने में सहायक रहा, वहीं दूसरी ओर अनुचित समय उपयोग और इंटरनेट निर्भरता ने मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता पर प्रभाव डाला। अनुसंधान से यह भी पता चला कि किशोरों द्वारा शैक्षिक संसाधनों के उपयोग में परिवार और विद्यालय दोनों की भूमिका निर्णायक रही कृ जहाँ माता–पिता और शिक्षकों ने मार्गदर्शन तथा नियंत्रण प्रदान किया, वहाँ इंटरनेट का सकारात्मक शैक्षिक उपयोग बढ़ा; जबकि जोखिम प्रबंधन और डिजिटल साक्षरता के अभाव में नकारात्मक परिणाम अधिक प्रबल हुए।
भारत में कई सर्वेक्षणों और क्षेत्रीय अध्ययनों ने यह संकेत दिया कि इंटरनेट ने सीखने की गतिशीलता को बढ़ाया कृ छात्र अब रिकॉर्डेड लेक्चर, ओपन–एडुकेशनल रिसोर्सेज, मूड्यूलर कोर्स और अन्तरराष्ट्रीय सामग्री तक पहुँच पा रहे हैं, जिससे उनकी

प्रतियोगी परीक्षाओं और विषय–विशेष ज्ञान अर्जित करने की संभावनाएँ विस्तृत हुईं। परन्तु अनुसंधान यह भी बताएगा कि केवल तकनीक उपलब्ध कराने से परिणाम स्वचालित रूप से नहीं आते; शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम–सहयोग, आकलन के नये रूप तथा इन–क्लास और ऑनलाइन गतिविधियों का समन्वय ही वास्तविक शैक्षिक लाभ सुनिश्चित कर सकता है। कई अध्ययनों ने पाया कि NEP 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप यदि डिजिटल कार्यक्रमों में स्थानीय भाषाई सामग्री, मूल्यांकन–रुब्रिक्स और ऑडिट / फीडबैक तंत्र सम्मिलित किए गए तो किशोरों की समझ और संलग्नता बेहतर बनी।

इसी क्रम में जोखिम और चुनौतियाँ भी विद्यमान पायी गयीं कृ डिजिटल विभाजन (कपहपजंस कपअपकम), किफायती डिवाइसेज़ तथा घर पर भरोसेमंद नेटवर्क की कमी ने ग्रामीण और शहरी पिछड़े वर्गों के किशोरों को असमान लाभों का सामना करवा दिया। इसके अतिरिक्त, अनेक क्लिनिकल और सामाजिक अध्ययनों ने युवा वर्ग में समस्या–जनक इंटरनेट उपयोग और ध्यान विचलन, नींद में कमी तथा सामाजिक अलगाव से जुड़े सम्बंधों की ओर संकेत किया, जो नीति–निर्माताओं के लिए बाल–सुरक्षा, स्क्रीन–समय दिशानिर्देश और साइबर–सुरक्षा शिक्षा को प्राथमिकता देने का संकेत है।

संगठित हस्तक्षेपों और पायलट–प्रोग्रामों के जरिए यह साबित हुआ कि किफायती डेटा पैक, स्कूल–स्तरीय डिजिटल लैब, और समुदाय–आधारित प्रशिक्षण किशोरों के शैक्षिक परिणामों में संवेधानिक सुधार ला सके हैंकृविशेषकर उन विषयों में जहाँ स्थानिक टीचिंग संसाधन कम उपलब्ध थे। अनुप्रयुक्त अध्ययनों ने यह सुझाया कि NEP 2020 के प्रावधानों को प्रभावी बनाने के लिए नीति निर्माताओं ने इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश के साथ–साथ डिजिटल साक्षरता पाठ्यक्रम, शिक्षक क्षमता निर्माण तथा निगरानी–मूल्यांकन तंत्रों को जोड़ना अनिवार्य माना। समग्रतः, उपलब्ध साहित्य ने यह संकेत दिया कि इंटरनेट किशोरों के शैक्षिक अनुभव को विस्तृत, वैयक्तिकृत और अधिक अनुकूल बनाकर उनकी भविष्य–तैयारी में योगदान दे सकता है, परन्तु उसके साथ जुड़े सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ, मनोवैज्ञानिक जोखिम तथा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ नीति और व्यावहारिक उपायों से ही नियंत्रित की जा सकती हैं। इस प्रस्तावना में उल्लिखित निष्कर्षों ने आगे के अध्यायों के लिए आधार प्रदान किया है जहाँ NEP 2020–प्रेरित डिजिटलीकरण के प्रभावों की विस्तृत विवेचना और क्षेत्रीय प्रमाणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

शिक्षा के वैश्विक परिदृश्य में इंटरनेट तथा डिजिटल तकनीकों का प्रवेश एक दशा–परिवर्तन (paradigm shift) स्वरूप अर्थ रखता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने शिक्षा के पारंपरिक मॉडलकृ'चॉक और टॉक' (बींसा–ंदक–जंसा) पद्धतिकृको चुनौती दी है और लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मल्टीमीडिया संसाधन, तथा इंटरैक्टिव प्लेटफार्मों की ओर स्थानांतरित किया है (Achary, 2025) । भारत में NEP 2020 ने इस दिशा को न केवल मान्यता दी, बल्कि डिजिटल शिक्षा को प्राथमिक औजार मानते हुए इसे राष्ट्रीय स्तर पर अपनाने के अनेक प्रस्ताव दिए हैं ।

1. शिक्षा और तकनीकी परिवर्तन का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में शिक्षा के डिजिटलीकरण की शुरूआत दूरशन शिक्षा और अभिलेखपत्र आधारित ओपन एवं डिस्टेंस लर्निंग (व्क्स्) कार्यक्रमों से हुई। प्ळछव्न् जैसे ओपन विश्वविद्यालयों ने ग्रामीण व दूरस्थ क्षेत्रों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रारंभिक प्रयास किया। बाद में, राष्ट्रीय मिशन इन एजुकेशन थ्रू ICT (NMEICT) और क्पहपजंस प्दकपं जैसी पहलों ने बुनियादी डिजिटल अवसंरचना और नेट कनेक्टिविटी को बढ़ावा दिया (जैम त्वसम व् िव्दसपदम ंदक क्पहपजंस म्कनबंजपवद पद NEP 2020) । SWAYAM जैसे MOOCs और अन्य ऑनलाइन शिक्षा कार्यक्रमों ने शैक्षिक सामग्री को जनसमूह तक पहुँचाने के प्रयासों को गति दी। महामारी (COVID–19) के दौरान शिक्षा संस्थाओं के बंद होने पर ऑनलाइन माध्यम लगभग अनिवार्य विकल्प बन गया, जिससे डिजिटल शिक्षा के अवसर और चुनौतियाँ दोनों उजागर हुईं ।

2. NEP 2020: डिजिटल शिक्षा की नीति और दिशा

NEP 2020 शिक्षा में समावेशिता, लचीलापन, और गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए डिजिटलीकरण पर विशेष जोर देता है। नीति में डिजिटल लर्निंग संसाधनों का सार्वजनिक भंडार (व्म्), एनईआरटी, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF), और डिजिटल लाइब्रेरी जैसे तंत्रों को प्रस्तावित किया गया है ताकि छात्रों और शिक्षकों को सहज पहुँच मिले । नीति यह मानती है कि डिजिटल शिक्षा न सिर्फ पहुँच बढ़ाएगी, बल्कि छात्रों को आत्मनिर्देशन, अंतरराष्ट्रीय संसाधनों से जोड़ने और नए कौशल अर्जित करने की संभावना भी देगी (Analyzing the impact of the new educational policy 2020) ।

NEP 2020 विशेष रूप से उन क्षेत्रों को लक्षित करती है जहाँ शिक्षा संसाधन सीमित हैं कृ ग्रामीण क्षेत्रों, पिछड़े जिलों और पिछड़ी सामाजिक पृष्ठभूमियों वाले छात्रों के लिए। इसमें यह ध्यान दिया गया है कि केवल इंटरनेट उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है; उसे प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, गुणवत्ता नियंत्रण, डिजिटल साक्षरता अभियानों तथा निगरानी और मूल्यांकन तंत्रों का निर्माण आवश्यक है ।

3. किशोरों और इंटरनेटः अवसर एवं चुनौतियाँ

किशोरावस्था वह अवधि है जब अध्ययन, सामाजिक विकास और आत्म–पहचान महत्वपूर्ण रूप से आकार लेते हैं। इंटरनेट ने इस आयु समूह को ज्ञान स्रोतों, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शिक्षा वीडियो, बहुभाषी ओपन रिसोर्सेज, वैश्विक सामग्री और शैक्षिक नेटवर्क्स तक पहुँच प्रदान की है। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन प्लेटफार्मों और वीडियो लेक्चर्स ने छात्रों को पुनरावलोकन और आत्म–अध्ययन के अवसर दिए हैं (Digitalization of Education under NEP, 2020) ।

लेकिन, कई अध्ययन यह भी चेतावनी देते हैं कि इंटरनेट उपयोग का अनियंत्रित रूप Digitalization of Education under (PIU)" या इंटरनेट लत (पदजमतदमज ंककICTपवद) का रूप धारण कर सकता है। Joseph et al. (2022) के मुताबिक, भारत में स्कूल–जाने वाले छात्रों में PIU का प्रचलन है, जो उनकी अध्ययन दक्षता, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है । Singh (2022) ने यह पाया कि PIU छात्रों में निद्रा विकार, शारीरिक थकान और ध्यान अभाव से जुड़ा है । त्जीप (2022) ने भारतीय किशोरों में इंटरनेट लत और पारिवारिक कारकों के बीच सम्बन्ध पर ध्यान दिया है, और बताया है कि पारिवारिक समर्थन और नियंत्रण लत को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

संक्षिप्त अध्ययन (च्जजमतद व िपदजमतदमज ंककICTपवद ंउवदह ंकवसमेबमदज ंबीववस) से ज्ञात है कि लगभग 35% वर्तमान इंटरनेट उपयोगकर्ता किशोर हैं, और उनमें इंटरनेट अधिव्यंजन (overuse) का प्रचलन देखा गया है। इन परिणामों से यह स्पष्ट है कि किशोरों की इंटरनेट उपयोग व्यवहार और उन पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है।

शोध उद्देश्य

1. एनईपी 2020 के संदर्भ में इंटरनेट आधारित शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना, ताकि यह समझा जा सके कि डिजिटल शिक्षा ने किशोरों के शैक्षिक अनुभवों, सीखने की गुणवत्ता और आत्म–निर्देशन क्षमता को किस प्रकार प्रभावित किया है।
2. समीक्षित साहित्य के माध्यम से इंटरनेट आधारित शिक्षा की चुनौतियों और संभावनाओं की पहचान करना, विशेषकर डिजिटल विभाजन, शिक्षक तत्परता, तथा तकनीकी पहुँच से संबंधित कारकों के संदर्भ में।

अध्ययन की कार्यप्रणाली

वर्तमान शोधपत्र "एनईपी 2020 के तहत किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को बढ़ाने में इंटरनेट की भूमिका" पूर्णतः साहित्य–आधारित (त्मअपमू च्ंचमत) अध्ययन है। इस अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन नहीं किया गया, बल्कि द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से विषय से संबंधित साहित्य का विश्लेषण किया गया है। यह शोध गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक (Descriptive) प्रकृति का है, जिसमें सिस्टेमैटिक लिटरेचर रिव्यू (Systematic Literature Review) पद्धति अपनाई गई है। इस विधि के अंतर्गत शोधकर्ता ने उपलब्ध शैक्षणिक साहित्य को एक सुनियोजित क्रम में संकलित, मूल्यांकित और विश्लेषित किया, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि एनईपी 2020 के अंतर्गत इंटरनेट ने किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को किस प्रकार प्रभावित किया है।

शोध की रूपरेखा तैयार करने में जॉन डब्ल्यू. क्रेसवेल (Creswell, 2009) द्वारा सुझाए गए "Onion Study Model" का अनुसरण किया गया, जिसके माध्यम से अध्ययन की दार्शनिक नींव (Interpretivism), शोध रणनीति (Systematic Review) और विश्लेषण प्रक्रिया (Thematic Analysis) को स्पष्ट किया गया। इस अध्ययन के लिए वर्ष 2019 से 2025 के मध्य प्रकाशित शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और संस्थागत दस्तावेजों का उपयोग किया गया, ताकि एनईपी 2020 के कार्यान्वयन काल और कोविड–19 के बाद के डिजिटल शिक्षा परिवर्तनों दोनों को समाहित किया जा सके।

शोधकर्ता ने कुल 14 शोध–पत्रों और रिपोर्टों को अध्ययन के लिए चुना। इन सभी स्रोतों का चयन पूर्व–निर्धारित मापदंडों के आधार पर किया गया था कृ जैसे कि अध्ययन का संबंध डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट–आधारित शिक्षण, एनईपी 2020, या किशोरों की शिक्षा से होना आवश्यक था। शोध–पत्रों को Google Scholar] ResearchGate] ScienceDirect, ShodhGanga और UNESCO व UNICEF की रिपोर्टों से चयनित किया गया। केवल उन्हीं अध्ययनों को शामिल किया गया जिनमें भारतीय संदर्भ में किशोरों की ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, और इंटरनेट उपयोग के शैक्षिक प्रभावों पर चर्चा की गई थी।

प्रत्येक अध्ययन को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके उद्देश्य, प्रयुक्त पद्धति, मुख्य निष्कर्ष और निष्कर्षात्मक टिप्पणी को दर्ज किया गया। इसके लिए एक तालिकात्मक प्रारूप तैयार किया गया जिसमें प्रत्येक अध्ययन का वर्ष, लेखक, शोध का विषय, अनुसंधान विधि, और परिणाम स्पष्ट रूप से अंकित किए गए। इस प्रकार तैयार की गई तालिका ने यह समझने में सहायता की कि किन अध्ययनों ने इंटरनेट को शिक्षा की सशक्तिकरण शक्ति के रूप में देखा और किन अध्ययनों ने इसके जोखिमों जैसेकृ डिजिटल विभाजन, इंटरनेट लत, तथा एकाग्रता की कमीकृ पर ध्यान केंद्रित किया।

संगृहीत साहित्य का गुणात्मक सामग्री विश्लेषण (Qualitative Content Analysis) और थीमैटिक विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया। सामग्री विश्लेषण के दौरान प्रत्येक अध्ययन से महत्वपूर्ण अवधारणाएँ और दोहराए जाने वाले

शब्द–समूह (जैसेकृ "डिजिटल साक्षरता", "स्व–निर्देशित अधिगम", "डिजिटल विभाजन", "इंटरनेट उपयोग") को कोड किया गया। इसके बाद इन कोडों को चार प्रमुख विषयगत श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया कृ

1. डिजिटल पहुँच और समानता (Digital Accessibility and Equity)
2. शिक्षण–पद्धति में परिवर्तन और शिक्षक तत्परता (Pedagogical Transformation and Teacher Readiness)
3. किशोरों की प्रेरणा और स्व–निर्देशित शिक्षा (Motivation and Self&Directed Learning)
4. चुनौतियाँः डिजिटल विभाजन एवं इंटरनेट निर्भरता (Challenges% Digital Divide and Dependency)

इन विषयों के आधार पर अध्ययन ने यह व्याख्या प्रस्तुत की कि इंटरनेट ने किस प्रकार किशोरों की शैक्षिक पहुँच, सीखने की गति, और आत्म–शिक्षण क्षमता को प्रभावित किया है। साथ ही, यह भी पाया गया कि डिजिटल अवसंरचना की असमानता, शिक्षकों की तकनीकी तैयारी की कमी, और इंटरनेट के अति–उपयोग से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक जोखिम अभी भी शिक्षा की गुणवत्ता में बाधक बने हुए हैं।

समीक्षित 14 अध्ययनों में से अधिकांश ने यह संकेत दिया कि एनईपी 2020 के बाद इंटरनेट का प्रयोग शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने में सहायक रहा है, विशेषकर ग्रामीण और अर्द्ध–शहरी क्षेत्रों के छात्रों के लिए। वहीं कुछ अध्ययनों ने यह भी बताया कि डिजिटल शिक्षा केवल तब प्रभावी होती है जब शिक्षकों और अभिभावकों दोनों की सक्रिय भागीदारी और डिजिटल साक्षरता मौजूद हो। समीक्षा से यह भी स्पष्ट हुआ कि कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्थायी परिवर्तन की दिशा को जन्म दिया, जिससे अब ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning) को नीति स्तर पर प्रोत्साहन मिला है।

साहित्य विश्लेषण

लेखक एवं वर्ष	उद्देश्य	पद्धति	परिणाम	निष्कर्ष
दुबे और भारद्वाज (2025)	डिजिटल और गैर–डिजिटल शिक्षण साधनों तथा उनके अधिगम पर प्रभाव का अध्ययन करना।	तीन जिलों के प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और डीआईईटी शिक्षकों के साथ साक्षात्कार।	डिजिटल उपकरणों से विद्यार्थियों की सहभागिता और उपस्थिति में वृद्धि हुई; टीएलएम ने गतिविधि–आधारित अधिगम में सहायता की।	डिजिटल एकीकरण प्रभावी रहा लेकिन आईसीटी की कमी और सीमित डिजिटल कौशल बाधक रहे।
वेंकटेश्वरलु (2021)	एनईपी 2020 की दृष्टि और कार्यान्वयन को समझाना।	नीति समीक्षा और वर्णनात्मक विश्लेषण।	एनईपी 2020 लचीली और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है; हिमाचल पहला राज्य बना जिसने इसे लागू किया।	नीति क्षेत्रीय लचीलापन बनाए रखते हुए शिक्षा को आधुनिक और एकीकृत करने का लक्ष्य रखती है।
मनेहरी (2024)	एनईपी 2020 के अंतर्गत आईसीटी की भूमिका को उजागर करना।	वैचारिक विश्लेषण।	आईसीटी रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और वैचारिक अधिगम को प्रोत्साहित करता है।	यह अनुभवात्मक और भविष्य–उन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देता है।
दास और आमिरुद्दीन (2023)	उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर एनईपी 2020 के प्रभाव का मूल्यांकन।	विश्लेषणात्मक अध्ययन।	अत्यधिक डिजिटल उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव; नीति परामर्श और लचीलेपन को समर्थन देती है।	एनईपी मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देता है, परंतु सशक्त क्रियान्वयन की आवश्यकता है।
मोंडल और सहकर्मी (2023)	एनईपी 2020 में डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करना।	वर्णनात्मक समीक्षा।	एनईपी MOOCs, ई–लर्निंग और लचीली शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देता है।	यह संकट काल में शिक्षा में डिजिटल लचीलापन विकसित करता है।
बाला, कौर और धीमन (2025)	एनईपी 2020 के प्रमुख प्रावधानों, कमियों और कक्षा–स्तरीय कार्यान्वयन का विश्लेषण।	साहित्य और द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित गुणात्मक अध्ययन।	नीति समग्र और दक्षता–आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करती है; चुनौतियों में डिजिटल विभाजन और शिक्षकों की तैयारी शामिल।	यदि क्षमता निर्माण और संदर्भ–संवेदनशील रणनीतियों के साथ लागू किया जाए तो एनईपी शिक्षा में क्रांति ला सकती है।

कल्याणी (2020)	एनईपी 2020 के प्रभाव और हितधारकों में जागरूकता का अध्ययन।	सोशल मीडिया प्रतिक्रियाओं के माध्यम से ऑनलाइन सर्वेक्षण।	एनईपी ने शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव लाए जो सभी हितधारकों को प्रभावित करते हैं।	नीति शिक्षा के आधुनिकीकरण का लक्ष्य रखती है लेकिन जागरूकता और तैयारी की आवश्यकता है।
खटक, वाधवा और कुमार (2022)	विद्यार्थियों और शिक्षकों की एनईपी 2020 के प्रति धारणा का मूल्यांकन।	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 101 प्रतिभागियों (विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक) पर सर्वेक्षण।	नीति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, परंतु क्रियान्वयन में कुछ कमियां उजागर हुईं।	बड़े पैमाने पर नीति लागू करने से पहले सरकार को आधारभूत संरचना सुधारनी चाहिए।
सम्तानी और भगवतुला (2022)	एनईपी 2020 के कार्यान्वयन और निवेश आवश्यकताओं का मूल्यांकन।	नीतिगत विश्लेषणात्मक अध्ययन।	सफलता शिक्षकों के कौशल, शासन और अवसंरचना उन्नयन पर निर्भर करती है।	प्रभावी क्रियान्वयन और जवाबदेही एनईपी की सफलता के लिए आवश्यक हैं।
मकम (2022)	एनईपी 2020 की एसडीजी 4 और भारतीय पारंपरिक शिक्षा मूल्यों के साथ संगति का विश्लेषण।	वैचारिक और आलोचनात्मक समीक्षा।	नीति आधुनिक लक्ष्यों को भारतीय परंपरा के साथ जोड़ती है, परंतु क्रियान्वयन में चुनौतियाँ हैं।	नीति वैश्विक और पारंपरिक मूल्यों में सामंजस्य स्थापित करती है; सफलता कार्यान्वयन पर निर्भर है।
गौतम (2024)	उच्च शिक्षा में पुस्तकालय अवसंरचना, डिजिटल पहुँच और समावेशिता पर एनईपी 2020 का प्रभाव।	द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित गुणात्मक नीतिगत विश्लेषण।	एनईपी डिजिटल पुस्तकालयों, आईसीटी युक्त विद्यालयों और छात्रवृत्तियों के माध्यम से समावेशिता को बढ़ावा देता है।	नीति गुणवत्ता और पहुँच बढ़ाती है, परंतु मानवीय, वित्तीय और तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता है।
मिश्रा (2021)	समग्र और बहुविषयक शिक्षा हेतु एनईपी 2020 के सुधारों पर समालोचनात्मक विचार।	एनईपी 2020 के ढांचे की विश्लेषणात्मक समीक्षा।	नीति में CBCS, ABC, लचीली शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसी सुधार पहलें शामिल हैं।	एनईपी संस्थागत पुनर्गठन और नवाचार के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को रूपांतरित करने की परिकल्पना करता है।
सिंह (2021)	शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण और गुणवत्ता सुधार हेतु एनईपी 2020 की दृष्टि का अध्ययन।	साहित्य समीक्षा पर आधारित वर्णनात्मक अध्ययन।	प्रौद्योगिकी ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया।	एनईपी 2020 तकनीकी प्रगति और शिक्षा गुणवत्ता पर केंद्रित दूरदर्शी ढांचा प्रदान करता है।
शर्मा (2015)	शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने में एनईपी 2020 की भूमिका का मूल्यांकन।	शिक्षकों की डिजिटल दक्षता का मात्रात्मक और धारणा–आधारित विश्लेषण।	शिक्षकों में डिजिटल परिवर्तन के प्रति मिश्रित तैयारी पाई गई; नीति ने जागरूकता को प्रोत्साहित किया।	एनईपी 2020 डिजिटल रूप से सक्षम शिक्षकों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है।

चर्चा

समीक्षित साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एनईपी 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में इंटरनेट और डिजिटल तकनीक की भूमिका को केंद्रीय स्थान प्रदान किया है, जिससे किशोरों के शैक्षिक अनुभवों में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। अधिकांश अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा की पहुँच, सहभागिता और अधिगम की गुणवत्ता में सकारात्मक वृद्धि की है। दुबे और भारद्वाज (2025) के अध्ययन ने दिखाया कि विद्यालय स्तर पर डिजिटल शिक्षण उपकरणों और शिक्षण–सामग्री (TLM) के प्रयोग से विद्यार्थियों की उपस्थिति और सीखने में रुचि बढ़ी है, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट आधारित शिक्षण किशोरों के अनुभवों को अधिक सक्रिय और सहभागितापूर्ण बनाता है। इसी प्रकार वेंकटेश्वरलु (2021)

और मनेहरी (2024) ने यह रेखांकित किया कि एनईपी 2020 के अंतर्गत आईसीटी (ICT) और डिजिटल शिक्षा न केवल शिक्षण में लचीलापन लाती है, बल्कि आलोचनात्मक सोच और सृजनात्मकता को भी बढ़ावा देती है, जिससे विद्यार्थियों में आत्म–निर्देशित अधिगम की प्रवृत्ति विकसित होती है।

दूसरी ओर, कुछ शोधों ने इस प्रक्रिया की सीमाओं को भी रेखांकित किया है। दास और आमिरुद्दीन (2023) ने पाया कि अत्यधिक इंटरनेट उपयोग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि इंटरनेट का उपयोग तभी लाभकारी है जब डिजिटल अनुशासन और संतुलित उपयोग सुनिश्चित किया जाए। इसके बावजूद, नीति स्तर पर यह स्वीकार किया गया है कि इंटरनेट शिक्षण को अधिक आकर्षक, सुलभ और व्यक्तिगत बनाने की क्षमता रखता है। मोंडल और सहकर्मी (2023) तथा बाला, कौर और धीमन (2025) ने यह संकेत दिया कि एनईपी 2020 द्वारा प्रोत्साहित ई–लर्निंग और MOOCs जैसी प्रणालियाँ संकटकाल, विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के दौरान, शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं। इन परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि एनईपी 2020 की डिजिटल दृष्टि ने किशोरों को वैकल्पिक शिक्षण विधियों से जोड़ते हुए उनके शैक्षिक अनुभवों को व्यापक बनाया है।

शोध यह भी दर्शाते हैं कि इंटरनेट–आधारित शिक्षण तभी प्रभावी हो सकता है जब शिक्षकों और अभिभावकों की तैयारी एवं डिजिटल साक्षरता पर्याप्त हो। खटक, वाधवा और कुमार (2022) के सर्वेक्षण में विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों ने एनईपी 2020 के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया, लेकिन उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि डिजिटल अवसंरचना और प्रशिक्षण की कमी क्रियान्वयन में बाधक बनी हुई है। यह निष्कर्ष सीधे तौर पर पहले उद्देश्य कृ "एनईपी 2020 के संदर्भ में इंटरनेट आधारित शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना" कृ को प्रमाणित करता है, क्योंकि अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि इंटरनेट का प्रयोग किशोरों के शिक्षण अनुभवों को समृद्ध करता है, परंतु इसकी सफलता उचित तकनीकी और संस्थागत तैयारी पर निर्भर करती है।

समीक्षित अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ कि एनईपी 2020 ने डिजिटल शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को अधिक समावेशी और गुणवत्ता–आधारित बनाने की दिशा में कदम उठाया है। गौतम (2024), मिश्रा (2021) और सिंह (2021) के निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि डिजिटल पुस्तकालयों, ऑनलाइन संसाधनों और तकनीकी साधनों के उपयोग ने उच्च शिक्षा में पहुँच, पारदर्शिता और सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाया है। इससे किशोरों में स्व–अध्ययन, रचनात्मकता और तकनीकी दक्षता की प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं।

वहीं, सम्तानी और भगवतुला (2022) तथा मकम (2022) के अध्ययन बताते हैं कि नीति की सफलता शिक्षक प्रशिक्षण, शासन में पारदर्शिता और वित्तीय निवेश पर निर्भर करती है। यह दूसरा उद्देश्य कृ "समीक्षित साहित्य के माध्यम से इंटरनेट आधारित शिक्षा की चुनौतियों और संभावनाओं की पहचान करना" कृ को प्रमाणित करता है, क्योंकि समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि इंटरनेट आधारित शिक्षा में अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन, मनोवैज्ञानिक जोखिम और संसाधन असमानता जैसे कारक अभी भी गंभीर चुनौतियाँ बने हुए हैं।

इन सभी अध्ययनों की सामूहिक समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि इंटरनेट ने एनईपी 2020 के लक्ष्यों कृ जैसे कि लचीलापन, समावेशिता, और गुणवत्ता शिक्षा कृ को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट ने न केवल किशोरों के लिए शिक्षण को सुलभ और रोचक बनाया, बल्कि उन्हें वैश्विक ज्ञान संसाधनों से भी जोड़ा। हालांकि, अध्ययनों ने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा प्रणाली में स्थायी परिवर्तन के लिए शिक्षक क्षमता निर्माण, डिजिटल अवसंरचना विकास, और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता आवश्यक है।

निष्कर्ष

समीक्षित साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को डिजिटल और तकनीकी युग की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित करने की दिशा में ठोस पहल की है। इस नीति ने न केवल शिक्षा को अधिक लचीला, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाने का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, बल्कि इंटरनेट को शिक्षण–अधिगम के एक मुख्य साधन के रूप में स्वीकार किया है। समीक्षा किए गए चौदह अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि इंटरनेट ने किशोरों के शैक्षिक अनुभवों में बहुआयामी सुधार किया है कृ जिसमें शिक्षण की पहुँच, सहभागिता, रचनात्मकता, और आत्म–निर्देशन क्षमता का विस्तार प्रमुख रूप से देखा गया।

अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ कि इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों के समुचित उपयोग से विद्यार्थियों में सीखने की प्रेरणा और विषयगत जिज्ञासा बढ़ी है। डिजिटल प्लेटफार्मों, ई–लर्निंग मॉड्यूल्स, MOOCs और ऑनलाइन संसाधनों ने किशोरों को सीमित भौगोलिक परिधियों से निकालकर वैश्विक ज्ञान समुदाय से जोड़ने में मदद की है। इसने न केवल शिक्षण को अधिक लचीला बनाया बल्कि व्यक्तिगत गति और रुचि के अनुसार अध्ययन का अवसर भी प्रदान किया। इस प्रकार, इंटरनेट ने एनईपी 2020 के उस मूल उद्देश्य को साकार किया है जो "सीखने की स्वतंत्रता और अवसर की समानता" पर आधारित है।

हालाँकि, समीक्षा यह भी इंगित करती है कि इस परिवर्तनशील प्रक्रिया के साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। डिजिटल विभाजन, संसाधनों की असमानता, सीमित नेटवर्क पहुँच, और शिक्षकों की डिजिटल तैयारी की कमी ने इस नीति के लक्ष्यों के पूर्ण क्रियान्वयन में बाधाएँ उत्पन्न की हैं। ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के किशोरों के लिए इंटरनेट अभी भी समान अवसर का साधन नहीं बन पाया है। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक इंटरनेट उपयोग से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक तनाव, ध्यान

विचलन और तकनीकी निर्भरता जैसे पहलू भी सामने आए हैं। यह संकेत देता है कि डिजिटल शिक्षा का लाभ तभी व्यापक हो सकता है जब इसके सामाजिक और मानसिक पहलुओं का भी संतुलित प्रबंधन किया जाए।

फिर भी, अधिकांश अध्ययनों ने यह माना है कि एनईपी 2020 ने भारत में शिक्षा के भविष्य की दिशा तय कर दी है, जहाँ इंटरनेट न केवल एक तकनीकी माध्यम है, बल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण (democratization of knowledge) का आधार बन चुका है। इसने शिक्षकों, छात्रों और नीति–निर्माताओं तीनों को एक नए शैक्षिक परिदृश्य में जोड़ने का कार्य किया है। किशोरों के संदर्भ में, इंटरनेट ने उनके सीखने के अनुभव को अधिक गतिशील, सशक्त और व्यवहारिक बनाया है।

अतः इस अध्ययन के दोनों उद्देश्यों की पूर्ति होती है कृ पहला, कि इंटरनेट आधारित शिक्षण ने किशोरों के शैक्षिक अनुभवों को व्यापक और समृद्ध बनाया है; और दूसरा, कि इंटरनेट शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को बढ़ाने की बड़ी संभावना रखते हुए भी डिजिटल अवसंरचना, साक्षरता और प्रशिक्षण की चुनौतियों से घिरा हुआ है।

अंततः कहा जा सकता है कि इंटरनेट ने एनईपी 2020 के दृष्टिकोण को व्यवहार में उतारने का मार्ग प्रशस्त किया है, परंतु इसके सतत और न्यायसंगत उपयोग के लिए नीति–निर्माताओं, शिक्षकों और समाज को सामूहिक रूप से प्रयास करने होंगे। डिजिटल साक्षरता, शिक्षक क्षमता निर्माण, और सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण सुनिश्चित करने के माध्यम से ही यह नीति अपने वास्तविक उद्देश्य कृ "हर किशोर के लिए समावेशी, लचीली और सशक्त शिक्षा" कृ को पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकेगी। इस प्रकार, इंटरनेट भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर चुका है, जिसने किशोरों के सीखने के अनुभवों को न केवल विस्तृत किया है बल्कि उन्हें भविष्य की चुनौतियों के प्रति अधिक तैयार और सशक्त बनाया है।

संदर्भ सूची:

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)। नई दिल्ली: भारत सरकार। उपलब्ध: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
2. यूनिसेफ एवं आईटीयू। (2020)। विश्व के दो-तिहाई स्कूली आयु के बच्चों के पास घर पर इंटरनेट की सुविधा नहीं है। (रिपोर्ट, 30 नवम्बर 2020)।
3. रामकृष्ण, एस. के. (2023)। जीवन कौशल और स्वस्थ इंटरनेट उपयोग पर एक पुनरावलोकन अध्ययन। पबमेड सेंट्रल।
4. जोसेफ, एन., वर्गीज़, एस., विजय, वी., एवं कुमार, ए. (2022)। शहरी क्षेत्र के किशोर विद्यार्थियों में इंटरनेट उपयोग और इसकी लत का विश्लेषण। जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर, 11(10), 6200–6208।
5. सिंह, एस. (2022)। किशोरों में समस्यात्मक इंटरनेट उपयोग के पूर्वानुमानक: एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन। एडिक्टिव बिहेवियर्स रिपोर्ट्स, 15, 100–178। एल्सेवियर।
6. राठी, ए., एवं वर्मा, पी. (2022)। किशोरों में इंटरनेट लत: परिवार, व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 64(8), 13–21।
7. अचार्य, एस. (2025)। भारतीय शिक्षा में डिजिटल अधिगम का रूपांतरण: एनईपी 2020 के बाद की दृष्टि। शोधज्ञान जर्नल ऑफ एजुकेशन, 12(3), 45–58।
8. IOSR जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस। (2024)। एनईपी 2020 में ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा की भूमिका। IOSR-JHSS, 29(7), 80–85।
9. साइंस डायरेक्ट। (2024)। भारत में डिजिटल शिक्षा सुधारों पर नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के प्रभाव का विश्लेषण। कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन: एक्स रियालिटी, 12(1), 1–12।
10. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस मैनेजमेंट (IJHSSM)। (2024)। एनईपी 2020 के अंतर्गत शिक्षा का डिजिटलीकरण: संभावनाएँ और चुनौतियाँ। IJHSSM, 11(2), 101–112।
11. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ। (2023)। भारतीय किशोर विद्यार्थियों में इंटरनेट लत का पैटर्न। IJCMPH, 10(4), 1–7।
12. इक़बाल, टी. (2021)। ग्रामीण भारत में डिजिटल तकनीक की लैंगिक पहुँच: स्मार्टफोन स्वामित्व और उपयोग पैटर्न का अध्ययन। arXiv प्रीप्रिंट, arXiv:2108.09788।
13. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज़ (IJRPR)। (2025)। भारत में डिजिटल विभाजन का आलोचनात्मक विश्लेषण: चुनौतियाँ और अवसर। IJRPR, 6(5), 201–210।
14. जोशी, के. (2023)। किशोरों पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव। लिंक्डइन लेख।
15. दुबे, ए., एवं भारद्वाज, बी. (2025)। ग्रामीण भारत में प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल हस्तक्षेप: एनईपी 2020 के कार्यान्वयन का विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजीज़ इन लर्निंग, 32(1)।
16. वेंकटेश्वरलु, बी. (2021)। एनईपी 2020 का आलोचनात्मक अध्ययन: मुद्दे, दृष्टिकोण और अवसर। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, 10(2), 191–196।

17. मनेहरी, डी. (2024)। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा का रूपांतरण: एनईपी 2020 का अध्ययन। साइंटिफिक कल्चर, 10(1), 284–290।
18. दास, एस., एवं आमिरुद्दीन, एस. (2023)। डिजिटल शिक्षा, मानसिक दृढ़ता और उच्च शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थियों का भावनात्मक स्वास्थ्य: एनईपी के संदर्भ में अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 5(6), 1–10।
19. मोंडल, जी. सी., कामिला, एस., सरकार, एस., एवं मोंडल, पी. (2023)। एनईपी 2020: ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा में पाठ्यक्रम सुधार की पहलें। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़, 10(2), 389–400।
20. बाला, आई., कौर, के., एवं धीमन, टी. (2025)। एनईपी 2020 के माध्यम से कक्षा अधिगम में क्रांति: आधुनिक शिक्षा में नीति और व्यवहार का सेतु। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्पररी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज़, 4(4), 265–274।
21. कल्याणी, पी. (2020)। एनईपी 2020 पर एक प्रायोगिक अध्ययन: भारतीय शिक्षा प्रणाली के भविष्य और हितधारकों पर प्रभाव। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट इंजीनियरिंग एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 7(5), 1–17।
22. खटक, एस., वाधवा, एन., एवं कुमार, आर. (2022)। एनईपी 2020 पर समीक्षा और सर्वेक्षण आधारित विश्लेषण: मिथक और वास्तविकता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस इन मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग साइंसेज, 12(1), 12–22।
23. सम्तानी, एस., एवं भगवतुला, एस. (2022)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020): भारत की शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए एक निवेश। SSRN जर्नल। DOI: 10.2139/ssrn.4061748।
24. मकम, एस. (2022)। एनईपी 2020 का आलोचनात्मक विश्लेषण: नई नीति और इसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ। अन्वेषा, 14, 20–28।
25. गौतम, ए. एस. (2024)। 21वीं सदी की शिक्षा में नई शिक्षा नीति 2020 की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (IJAR), 10(6), 130–138।
26. मिश्रा, एस. (2021)। भारत में उच्च शिक्षा का पुनर्रचना: एनईपी 2020 के परिप्रेक्ष्य में विचार। एजुकेशन इंडिया जर्नल, 10(2), 138–139।
27. सिंह, आई. (2021)। शिक्षा में आधुनिक प्रौद्योगिकी की भूमिका: भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अवलोकन। मल्टीडिसिप्लिनरी इश्यूज़ इन सोशल साइंस रिसर्च, 101–120।
28. शर्मा, पी. (2021)। प्रौद्योगिकी-संवर्धित शिक्षण: शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता में एनईपी 2020 की भूमिका का मूल्यांकन। AIJRA जर्नल, 8(3)।